7. परंपरा का मूल्यांकन

पाठ का सारांश

- जो लोग साहित्य में युग-परिवर्तन करना चाहते हैं, जो लकीर के फकीर नहीं है, जो रूढ़ियाँ तोड़कर क्रांतिकारी साहित्य रचना चाहते हैं, उनके लिए साहित्य परम्परा का ज्ञान सबसे ज्यादा आवश्यक है। जो लोग समाज में बुनियादी परिवर्तन करके वर्गहीन शोषणमुक्त समाज की रचना करना चाहते हैं; वे अपने सिद्धान्तों को ऐतिहासिक भौतिकवाद के नाम से पुकारते हैं।
- प्रगतिशील आलोचना किन्हीं अमूर्त सिद्धान्तों का संकलन, नहीं है, वह साहित्य की परम्परा का मूर्त ज्ञान है। और यह ज्ञान उतना ही विकासमान है जितना साहित्य की परम्परा।
- साहित्य की परंपरा का मूल्यांकन करते हुए सबसे पहले हम उस साहित्य का मूल्य निर्धारित करते हैं जो शोषक वर्गों के विरुद्ध श्रमिक जनता के हितों को प्रतिबिम्बित करता है। साहित्य में मनुष्य की बहुत-सी आदिम भावनाएँ प्रतिफलित होती हैं जो उसे प्रतिमात्र से जोड़ती हैं। उसमें मनुष्य का इन्द्रिय-बोध, उसकी भावनाएँ भी व्यजित होती है। साहित्य का यह पक्ष अपेक्षाकृत स्थायी होता है।
- साहित्य के निर्माण में प्रतिभाशाली मनुष्यों की भूमिका निर्णायक है। इसका यह अर्थ नहीं कि ये मनुष्य जो करते हैं, वह सब अच्छा ही अच्छा होता है, या उनके श्रेष्ठ कृतित्व में दोष नहीं होते। कला का पूर्णतः निर्दोष होना भी एक दोष है। साहित्य के मूल्य, राजनीतिक मूल्यों की अपेक्षा अधिक स्थायी है। अंग्रेज कवि टेनीसन ने लैटिन कवि वर्जिल पर एक बड़ी अच्छी कविता लिखी थी। इसमें उन्होंने कहा कि रोमन साम्राज्य का वैभव समाप्त हो गया पर वर्जिल के काव्य सागर की ध्वनि-तरंगें हमें आज भी सुनाई देती हैं और हृदय को आनन्द-विह्वल कर देती है। कह सकते हैं कि जब ब्रिटिश साम्राज्य का कोई नामलेवा और पानी देने वाला न रह जाएगा, तब शेक्सपियर, मिल्टन और शैली विश्व संस्कृति के आकाश में वैसे ही जगमगाते नजर आएँगे जैसे पहले, और उनके प्रकाश पहले की अपेक्षा करोड़ों नई आँखें देखेंगी।
- संसार का कोई भी देश, बहु जातीय राष्ट्र की हैसियत से, इतिहास को ध्यान में रखें तो भारत का मुकाबला नहीं कर सकता। यहाँ राष्ट्रीयता एक जाति द्वारा दूसरी जातियों पर राजनीतिक प्रभुत्व कायम करके स्थापित नहीं हुई। वह मुख्यतः संस्कृति और इतिहास की देन है। इस संस्कृति के निर्माण में इस देश के कवियों का सर्वोच्च स्थान है। इस देश की

संस्कृति से रामायण और महाभारत को अलग कर दें, तो भारतीय साहित्य की आन्तरिक एकता टूट जाएगी। किसी भी बहुजातीय राष्ट्र की सामाजिक विकास में कवियों की ऐसी निर्णायक भूमिका नहीं रही, जैसी इस देश में व्यास और वाल्मीकि की है।

- समाजवाद हमारी राष्ट्रीय आवश्यकता है। पूंजीवादी व्यवस्था में शक्ति का इतना अपव्यय होता है कि उसका कोई हिसाब नहीं है। देश की साधनों का सबसे अच्छा उपीग समाजवादी व्यवस्था कायम करने के बाद पहले की अपेक्षा कहीं ज्यादा शक्तिशाली हो गए हैं और उनकी प्रगति की रफ्तार किसी भी पूंजीवादी देश की अपेक्षा तेज है। साहित्य की परम्परा का पूर्ण ज्ञान समाजवादी व्यवस्था में ही सम्भव है। समाजवादी संस्कृति पुरानी संस्कृति से नाता नहीं तोड़ती, वह उसे आत्मसात करके आगे बढ़ती है।
- अभी हमारे निरक्षर निर्धन जनता नए और पुराने साहित्य की महान उपलब्धियों के ज्ञान से वंचित है। जब वह साक्षर होगी, साहित्य पढ़ने का उसे अवकाश होगा, सुविधा होगी, तब व्यास और वाल्मीकि के करोड़ों नए पाठक होंगे। तब मानव संस्कृति की विशद धारा में भारतीय साहित्य की गौरवशाली परम्परा का नवीन योगदान होगा।

7. साहित्य की परंपरा का मूल्यांकन

लेखक परिचय

लेखक - रामविलास शर्मा

जन्म - 10 अक्टूबर 1912 (उन्नाव जिला, उत्तर प्रदेश में)

→ 1932 ई॰ में लखनऊ विश्विद्यालय से B.A किया था |

→ 1938 - 43 ई॰ तक लखनऊ विश्वद्यालय में अंग्रेजी के अध्यापक रहे।

→ 1974 ई॰ में यह रिटायर हो गये। अर्थात सेवावृत

→ 1949-1933 ई॰ तक रामविलाश शर्मा प्रगतिशील लेखक संघ के महा-मंत्री बने रहे थे।

* प्रमुख रचनाएँ :- निराला की साहित्य साधना, आचार्य रामचन्द्र शुक्ल, हिन्दी आलोचक, भारतेन्दु हरिसचन्द्र, प्रेमचन्द्र और उनका युग, भाषा और समाज भारत की भाषा समस्या, विराम चिन्ह, बड़े भाई,

7. साहित्य की परंपरा का मूल्यांकन

Short answer question

1. (i) साहित्य की परंपरा का ज्ञान किनके लिए सबसे ज्यादा आवश्यक है, और क्यों ?

उत्तर - जो लोग रूढ़ियों को तोड़कर क्रांतिकारी साहित्य की रचना करना चाहते हैं तथा साहित्य में युग-परिवर्तन की आकांक्षा रखते हैं, उनके लिए साहित्य की परंपरा का ज्ञान सबसे ज्यादा आवश्यक है।

(ii) कौन अपने सिद्धांतों को 'ऐतिहासिक भौतिकवाद' के नाम से पुकारते हैं?

उत्तर - जो लोग वर्गहीन शोषणमुक्त समाज की रचना कर समाज में मौलिक परिवर्तन की इच्छा रखते हैं, वे ही अपने सिद्धांतों को 'ऐतिहासिक भौतिकवाद' के नाम से पुकारते हैं।

(iii) 'आलोचना' के लिए क्या महत्त्वपूर्ण होता है ?

उत्तर - 'आलोचना' के लिए साहित्य की परंपरा का ज्ञान महत्त्वपूर्ण होता है।

(iv) साहित्य की धारा को मोड़ने के लिए क्या आवश्यक है ?

उत्तर - साहित्य की धारा को मोड़ने के लिए प्रगतिशील आलोचना का ज्ञान आवश्यक है।

2. 'परंपरा का मूल्यांकन' शीर्षक निबंध का भावार्थ लिखें।

उत्तर - साहित्य का संबंध मनुष्य के संपूर्ण जीवन से है। इसमें चित्रित आदिम भावनाएँ प्राणिमात्र से जोड़ती हैं। साहित्य मात्र विचारधारा नहीं है। इसमें मानवीय इंद्रिय-बोध के साथ उसकी भावनाएँ भी अभिव्यक्त होती हैं।

3. (i) साहित्य की परंपरा का मूल्यांकन करते हुए सबसे पहले हम क्या करते हैं ?

उत्तर - साहित्य की परंपरा का मूल्यांकन करते हुए सबसे पहले हम उस - साहित्य का मूल्य निर्धारण करते हैं जिसमें शोषक वर्ग के विरुद्ध श्रमिक जनता के हितों का चित्रण होता है।

(ii) हम साहित्य की परंपरा का मूल्यांकन करते हुए किस साहित्य पर ध्यान देते हैं ?

उत्तर - हम साहित्य की परंपरा का मूल्यांकन करते हुए उस साहित्य पर ध्यान देते हैं जिसमें शोषित जनता के श्रम को आधार बनाया गया होता है तथा यह देखने की कोशिश करते हैं कि वह साहित्य वर्तमानकाल में जनता के लिए कितना उपयोगी है। और उसका उपयोग किस तरह किया जा सकता है।

(iii) संपत्तिशाली वर्गों की देखरेख में रचे गए साहित्य के संबंध में लेखक रामविलास शर्मा ने क्या कहा है ?

उत्तर - संपत्तिशाली वर्गों की देखरेख में निर्मित साहित्य के संबंध में लेखक रामविलास शर्मा ने कहा है कि वह उनके (संपत्तिशाली वर्ग के) वर्गहितों को प्रतिबिंबित करता है। लेकिन, उसे भी यह परखकर देखना चाहिए कि यह अभ्युदयशील वर्ग का साहित्य है या ह्रासमान वर्ग का ।

(iv) जहाँ पूँजीवाद का यथेष्ट विकास हो गया है, लेखक ने वहाँ कैसी संभावना का उल्लेख किया है ? पुराने साहित्य में किसकी संभावना कम होती है ?

उत्तर - जहाँ पूँजीवाद का यथेष्ट विकास हो गया है, वहाँ यही संभावना रहती है। कि संपत्तिशाली वर्ग और निर्धन वर्ग एक-दूसरे के सामने प्रबल विरोधी बनकर खड़े हों। पुराने साहित्य में वर्गहित के स्पष्ट टकराने की संभावना कम रहती है।

4. (i) साहित्य के निर्माण में किनकी भूमिका निर्णायक होती है? प्रतिभाशाली मनुष्यों की अद्वितीय उपलब्धियों के बाद कुछ नया और उल्लेखनीय करने की गुंजाइश क्यों बनी रहती है ?

उत्तर - साहित्य के निर्माण में प्रतिभाशाली साहित्यकारों की भूमिका निर्णायक होती है। प्रतिभाशाली मनुष्यों या साहित्यकारों की अद्वितीय उपलब्धियों के बाद भी कुछ नया और उल्लेखनीय करने की गुंजाइश बनी रहती है। इसका मुख्य कारण है भाव का अनंत विस्तार। महान से महान कवि भी किसी विशिष्ट भाव की अभिव्यक्ति अपनी अनुभव-सीमा में ही करते हैं, अतः किसी विशेष भाव या संवेदना की संपूर्ण या समग्र अभिव्यक्ति किसी कवि के वश की बात नहीं है। यह अपूर्णता कला का दोष नहीं है, अपितु यह कला के सौंदर्य की संभावना को व्यक्त करती है। इस संभावना से ही कला में जीवन का संचार होता है। भाव की अनंतता और अनंत विस्तार यदि किसी प्रतिभाशाली साहित्यकार की रचना में प्रस्तुत नहीं होते, तो यह दोष, दोष नहीं कहलाता, अपितु यह रचनात्मक

सहजता को अभिव्यक्त करता है, क्योंकि पूर्णता मानवीय प्रकृति नहीं है, पूर्णता के लिए प्रयत्न करना मानवीय प्रवृत्ति के अंतर्गत आता है।

(ii) साहित्य के निर्माण में प्रतिभा की भूमिका स्वीकार करते हुए लेखक किन खतरों से आगाह करता है ?

उत्तर - साहित्य के निर्माण में प्रतिभा की भूमिका स्वीकार करते हुए लेखक ने हमें आगाह किया है कि यह सोचना कि प्रतिभासंपन्न साहित्यकारों की रचनाओं में सब अच्छा ही होता है, ठीक नहीं है। हम प्रायः यही सोचते हैं कि उनकी श्रेष्ठ कृतियों में दोष नहीं होते। ऐसा सोचना ठीक नहीं है।

(iii) कवि टेनीसन ने वर्जिल पर लिखी अपनी कविता में क्या कहा है ?

उत्तर - कवि टेनीसन ने वर्जिल पर लिखी अपनी कविता में लिखा है कि रोमन साम्राज्य का वैभव समाप्त हो गया, पर वर्जिल के काव्य सागर की ध्वनि तरंगें हमें आज भी सुनाई पड़ती हैं जिनसे हमें असीम आनंद की प्राप्ति होती है।

5. (i) परंपरा का ज्ञान किनके लिए सबसे ज्यादा आवश्यक है, और क्यों ?

उत्तर - जो लोग (ऐसे साहित्यकार) रूढ़ियों के अनुगामी नहीं हैं तथा क्रांतिकारी साहित्य की रचना के माध्यम से युग-परिवर्तन की आकांक्षा रखते हैं, उनके लिए साहित्य की परंपरा का ज्ञान सबसे ज्यादा आवश्यक है।

(ii) परंपराओं से क्या सीखा जा सकता है ?

उत्तर - परंपराओं से धार्मिक सहिष्णुता, सांस्कृतिक समझ, सामाजिक समरसता, सृजन तथा सर्वदा आगे बढ़ने की कला सीखी जा सकती है। हम इनके माध्यम से समाज एवं राष्ट्र के पुनर्गठन की निर्धारक क्षमता को एक स्वस्थ दिशा में ले जाने की कला सीखते हैं।

7. परंपरा का मूल्यांकन

1. निबंध 'परंपरा का मूल्यांकन' के लेखक कौन है?

(A) अमरकांत

(B) रामविलास शर्मा

(C) नलिन विलोचन शर्मा

(D) यतीन्द्र मिश्र

Ans - (B)

2. हिन्दी आलोचना के महत्त्वपूर्ण हस्ताक्षर डॉ० रामविलास शर्मा का जन्म कब और कहाँ हुआ?

(A) 1916-बदरघाट, पटन

(B) 1912-उन्नाव, उत्तरप्रदेश

(C) 1925-बलिया, उत्तरप्रदेश

(D) 1941-दुर्ग, छत्तीसगढ़

Ans - (B)

3. परंपरा का मूल्यांकन गद्य की कौन-सी विधा है?

(A) कहानी

(B) निबंध

(C) नाटक

(D) जीवनी

Ans - (B)

4. रामविलास शर्मा का निधन कब हुआ था?

(A) 30 मई, 2000 ई०

(B) 30 मई, 2001 ई०

(C) 30 मई, 2002 ई०

(D) 30 मई, 2003 ई०

Ans - (A)

5. साहित्य की परम्परा का पूर्ण ज्ञान किस व्यवस्था में संभव है?

(A) सामन्तवादी व्यवस्था

(B) पूँजीवादी व्यवस्था

(C) समाजवादी व्यवस्था

(D) उपर्युक्त सभी

Ans - (C)

6. साहित्य के निर्माण में प्रतिभाशाली मनुष्यों भूमिका है।

(A) नगण्य

(B) निर्णायक

(C) नकारात्मक

(D) इनमें से कोई नहीं

Ans - (B)

7. जातीय अस्मिता की दृष्टि से इतिहास का प्रवाह कैसा है?

(A) विच्छिन्न

(B) अविच्छिन्न

(C) विच्छिन्न और अविच्छिन्न दोनों

(D) इनमें से कोई नहीं

Ans - (C)

8. परंपरा का ज्ञान किनके लिए आवश्यक है?

(A) जो लकीर के फकीर है

(B) जो उपयोगी साहित्य की रचना न करे

(C) जो लकीर के फकीर न होकर क्रांतिकारी साहित्य की रचना करे

(D) जो उपयोगी साहित्य की रचना न करे

Ans - (C)

9. हिन्दी आलोचना को वैज्ञानिक दृष्टि प्रदान करने का श्रेय किनको प्राप्त है?

(A) रामविलास शर्मा

(B) नलिन विलोचन शर्मा

(C) अमरकांत

(D) यतीन्द्र मिश्र

Ans - (A)

10. हिन्दी में जीवनी साहित्य को एक नया आयाम दिया है?

(A) यतीन्द्र मिश्र

(B) अमरकांत

(C) रामविलास शर्मा

(D) नलिन विलोचन शर्मा

Ans - (C)

11. साहित्य मुनष्य के संपूर्ण जीवन से संबद्ध है। आर्थिक जीवन के अलावा मुनष्य एक प्राणी के रूप में भी अपना जीवन बिताता है। साहित्य में उसकी बहुत-सी आदिम भावनाएँ प्रतिफलित होती हैं जो उसे प्राणी मात्र से जोड़ती है। यह गद्यांश किस पाठ का है?

(A) आविन्यों

(B) मछली

(C) शिक्षा और संस्कृति

(D) परंपरा का मूल्यांकन

Ans - (D)

12. विभाजित बंगाल से विभाजित पंजाब की तुलना कीजिए, तो ज्ञात हो जाएगा कि साहित्य की परंपरा का ज्ञान कहाँ ज्यादा है, कहाँ कम है, और इस न्यूनाधिक ज्ञान के सामाजिक परिणाम क्या होते हैं? उपर्युक्त गद्यांश किस पाठ से लिया गया है?

(A) श्रम विभाजन और जातिप्रथा

(B) विष के दाँत

(C) शिक्षा और संस्कृति

(D) परंपरा का मूल्यांकन

Ans - (D)

13. रामविलास शर्मा के अनुसार भारत की राष्ट्रीय क्षमता का पूर्ण विकास किस व्यवस्था में ही संभव है?

(A) समाजवादी व्यवस्था

(B) मिश्रित अर्थव्यवस्था

(C) पूँजीवादी व्यवस्था

(D) मार्क्सवादी व्यवस्था

Ans - (A)

14. जो लोग साहित्य में युग परिवर्तन करना चाहते हैं, जो लकीर के फकीर नहीं है, जो रूढ़िय तोड़कर क्रांतिकारी साहित्य रचना चाहते हैं, उनके लिए साहित्य की परंपरा का ज्ञान सबसे ज्यादा आवश्यक ह। प्रस्तुत गद्यांश किस पाठ से उद्धृत हैं?

(A) शिक्षा और संस्कृति

(B) परंपरा का मूल्यांकन

(C) नौबतखाने में इवादत

(D) आविन्यों

Ans - (B)

15. किसने सोवियन संघ पर आक्रमण किया?

(A) महारानी विक्टोरिया

(B) हिटलर ने

(C) पुतिन ने

(D) लेनिन ने

Ans - (B)

16. यदि मनुष्य परिस्थितियों का नियामक नहीं है तो परिस्थितियाँ भी मनुष्य की-

(A) नियासक है

(B) नियामक नहीं है

(C) सुरक्षा नहीं है

(D) आवश्यकता नहीं है

Ans - (B)

17. जारशाही कहाँ थी?

(A) रूस में

(B) जापान में

(C) फ्रांस में

(D) चीन में

Ans - (A)

36. "निराला की साहित्य साधना के रचनाकार है?

(A) रघुवीर सहाय

(B) अज्ञेय

(C) जायसी

(D) रामविलास शर्मा

Ans - (D)

19. "साहित्य मनुष्य के संपूर्ण जीवन से संबद्ध है- यह पंक्ति किस पाठ से उद्धत है?

(A) परंपरा का मूल्यांकन

(B) नागरी लिपि

(C) नाखून क्यों बढ़ते हैं

(D) बहादुर

Ans - (A)

20. रामविलास शर्मा को उनकी किस कृति के लिए 'साहित्य अकादमी पुरस्कार दिया गया था?

(A) प्रेमचंद और उनका युग

(B) भाषा और समाज

(C) निराला की साहित्य साधना

(D) विराम चिह्न

Ans - (C)

21. सोवियत संघ के लोग हिटलर विरोधी संग्राम को क्या कहते हैं?

(A) महान राष्ट्रीय संग्राम

(B) स्वाधीनता संग्राम

(C) राजनीतिक संग्राम

(D) सामाजिक संग्राम

Ans - (A)

22. किस व्यवस्था के कायम होने पर जातीय अस्मिता खण्डित नहीं होती वरन् और पुष्ट होती है?

(A) समाजवादी व्यवस्था

(B) पूंजीवादी व्यवस्था

(C) मिश्रित व्यवस्था

(D) राजनैतिक व्यवस्था

Ans - (A)

23. भारतीय संस्कृति से किन दो ग्रंथों को अलग कर दें, तो भारतीय साहित्य की आंतरिक एकता टूट जायेगी?

(A) वेद और पुराण

(B) रामायण और महाभारत

(C) हरिजन और यंग इंडिया

(D) रघुवंशम् और अभिज्ञान शाकुंतलम्

Ans - (B)

24. निबंध है -

(A) मछली

(B) परम्परा का मूल्यांकन

(C) बहादुर

(D) भारतमाता

Ans - (B)

25. 'प्रेमचंद और उनका युग' किनकी रचना है-

(A) गुणाकर मुले

(B) यतीन्द्र मिश्र

(C) रामविलास शर्मा

(D) अमरकांत

Ans - (C)

26. भारतीय प्रगतिशील लेखक संघ के महामंत्री रहे-

(A) भीमराव अंबेदकर

(B) रामविलास शर्मा

(C) अमरकांत

(D) यतीन्द्र मिश्र

Ans - (B)

27. अस्मिता का सही अर्थ है -

(A) पहचान (अस्तित्व)

(B) मना करना

(C) एकता

(D) पर्याप्त

Ans - (A)

28. लेखक रामविलास शर्मा के गाँव का क्या नाम था ?

(A) ऊँचगा सानी

(B) ऊँचगाँव सानी

(C) उचकागाँव सैनी

(D) ऊँचागाँव सैनी

Ans - (B)

29.'भौतिकवाद का अर्थ भाग्यवाद नहीं है' - किस निबंध की पंक्ति है?

(A) नागरी लिपि

(B) परंपरा का मूल्यांकन

(C) श्रम विभाजन और जाति प्रथा

(D) नाखून क्यों बढ़ते हैं

Ans - (B)